देश में लहलहाएगी सीएसए की नवविकसित राई-सरसों की प्रजातियां

31/05/2021

कानपुर (स्पष्ट आवाज)। सीएसए द्वारा नवविकसित राई- सरसों की दो उदयीमान प्रजातियां आजाद महक (केएमआर (ई)15-2) एवं सरसों (तोरिया) की प्रजाति आजाद चेतना (टीकेएम 14-2) अब कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश के लगभग सभी राज्यों के लिए केंद्रीय सरकार द्वारा बीज अधिनियम 1966 (1966 क 54) की धारा 5 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केंद्रीय बीज समिति ने परामर्श के उपरांत सीएसए द्वारा नव विकसित राई-सरसों की प्रजातियों को बीज एवं फसल उत्पादन की श्रेणी में शामिल किया है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली में 15 मई को आहूत हुई 68 वी बैठक में इन प्रजातियों को शामिल कर बीज एवं फसल उत्पादन हेतु पूरे देश के लिए संस्तुति कर दिया है। विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ महक सिंह ने बताया कि राई की आजाद महक प्रजाति उच्च ताप सहिष्णु एवं अगेती बुवाई हेतु उत्तम है। उन्होंने बताया कि इसकी उत्पादन क्षमता 24 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा बुवाई के 120 से 125 दिन बाद पक कर तैयार हो जाती है। साथ ही इस प्रजाति में तेल प्रतिशत 41.6 से 42.1त्न है डॉ सिंह ने बताया कि यह प्रजाति अल्टरनरिया झुलसा एवं सफेद गेरुई रोग के प्रति प्रतिरोधी है। डॉ महक सिंह ने सरसों (तोरिया) की आजाद चेतना प्रजाति की विशेषताओं के बारे में बताया कि यह प्रजाति सहफसली फसलों के लिए उपयुक्त है।तथा यह 90 से 95 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है।और इसका उत्पादन 12 से 14 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। साथ ही इस प्रजाति में 42.2 से 42.4 प्रतिशत तेल पाया जाता है।

आज
कानपुर
31 मई , 2021
5

सीएसए ने विकसित की राई-सरसों की प्रजातियां, बढ़ेगी पैदावार

❑ 120 से 125 दिन में पक कर तैयार हो जाती है फसल

वीसी डा.आर सिंह

कानपुर, 30 मई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा नवविकसित राई- सरसों की दो उदयीमान प्रजातियां आजाद महक (के एम आर(ई)15-2) एवं सरसों(तोरिया) की प्रजाति आजाद चेतना (टीकेएम 14-2) अब कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश के लगभग सभी राज्यों के लिए केंद्रीय सरकार द्वारा बीज अधिनियम 1966 (1966 क 54) की धारा 5 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केंद्रीय बीज समिति ने परामर्श के उपरांत सीएसए द्वारा नव विकसित राई-सरसों की प्रजातियों को बीज एवं फसल उत्पादन की श्रेणी में शामिल किया है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय , नई दिल्ली में 15 मई 2021 को आहूत हुई 68 वी बैठक में इन प्रजातियों को शामिल कर बीज एवं फसल उत्पादन हेतु पूरे देश के लिए संस्तुति कर दिया है। विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ महक सिंह ने बताया कि राई की आजाद महक प्रजाति उज्च ताप सहिष्णु एवं अगेती बुवाई हेतु उत्तम है। उन्होंने बताया कि इसकी उत्पादन क्षमता 24 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा बुवाई के 120 से 125 दिन बाद पक कर तैयार हो जाती है। साथ ही इस प्रजाति में तेल प्रतिशत 41.6 से 42.1 प्रतिशत है डॉ सिंह ने बताया कि यह प्रजाति अल्टरनरिया झुलसा एवं सफेद गेरुई रोग के प्रति प्रतिरोधी है। डॉ महक सिंह ने सरसों (तोरिया) की आजाद चेतना प्रजाति की विशेषताओं के बारे में बताया कि यह प्रजाति सहफसली फसलों के लिए उपयुक्त है।तथा यह 90 से 95 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है।और इसका उत्पादन 12 से 14 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। साथ ही इस प्रजाति में 42.2 से 42.4त तेल पाया जाता है। इसके अतिरिक्त यह प्रजाति भी अल्टरनरिया झुलसा और गेरुई रोग के प्रति प्रतिरोधी है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह ने बीज समिति की बैठक की कार्यबृत्ति आने पर विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डॉ महक सिंह एवं उनकी शोध टीम को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।साथ ही कहा है कि देश में विश्व विद्यालय की नवविकसित राई- सरसों की प्रजातियां पीली क्राति में अहम योगदान देंगी। कुलपति डॉ सिंह ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से अपेक्षा की है कि वे शोध कार्यो में गति प्रदान कर फसलों की नई नई प्रजातियां विकसित करें ।

डॉ महक सिंह

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • सोमवार • 31 मई • 2021

देशभर में लहराएंगी सीएसए में विकसित

राई व सरसों की नई प्रजातियां

कानपुर (एसएनबी)।

विवि कुलपति डॉ.डी.आर.सिंह व डॉ. महक सिंह। फोटो : एसएनबी

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा विकसित राई व सरसों की दो नई प्रजातियां कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देशभर में लहराएंगी। भारत सरकार की केंद्रीय बीज समिति के परामर्श के उपरांत सीएसए द्वारा नव विकसित राई सरसों की प्रजातियां को बीज एवं फसल उत्पादन की श्रेणी में शामिल किया गया है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय नई दिल्ली में 15 मई को हुई समिति की 68 वीं बैठक में इन प्रजातियों को बीज एवं फसल उत्पादन के लिए पूरे देश के लिए संस्तुत किया गया है।

विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभागाध्यक्ष डॉ. महक सिंह ने राई सरसों की दो प्रजातियां आजाद महक (केएमआर (ई) 15-2) एवं सरसों (तोरिया) की प्रजाति आजाद चेतना (टीकेएम 14-2) के लिए कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश के लगभग सभी राज्यों के लिए संस्तुति मिलने पर प्रसन्नता जाहिर की। उन्होंने बताया कि राई की आजाद महक प्रजाति उच्च ताप सहिष्णु अगेती बुवाई हेतु उत्तम है। इसकी उत्पादन क्षमता 24 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा बुवाई के 120 से 125 दिन बाद पक कर तैयार हो जाती है। इस प्रजाति में तेल प्रतिशत 41.6 से 42.1 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि यह प्रजाति अल्टरनरिया झुलसा एवं सफेद गेरुई रोग के प्रति प्रतिरोधी है। उन्होंने बताया कि सरसों (तोरिया) की आजाद चेतना प्रजाति की विशेषताएं यह है कि यह सहफसली फसलों के लिए उपयुक्त है तथा यह 90 से 95 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। इसका उत्पादन 12 से 14 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। साथ ही इस प्रजाति में 42.2 से 42.4 प्रतिशत तेल पाया जाता है। यह प्रजाति भी अल्टरनरिया, झुलसा एवं गेरुई रोग के प्रति प्रतिरोधी है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने बीज समिति की बैठक की कार्यवृत्त आने पर विभागाध्यक्ष डॉ. महक सिंह एवं उनकी शोध टीम को बधाई दी है।

24 से 25 प्रति कुंतल प्रति हेक्टेयर होगा राई का उत्पादन, 120 से 125 दिन में पक कर होगी तैयार

सरसों की नई प्रजाति सहफसली के लिए उपयुक्त, 90 से 95 दिनों में पक कर होगी तैयार

हिन्दुस्तान कानपुर • सोमवार • 31 मई 2021 10

सरसों की इस फसल पर मुनाफा ज्यादा

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) की सरसों की नई प्रजाति अब कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक लहलहाएगी। इसके अधिक उत्पादन से किसानों को ही नहीं बल्कि अधिक तेल होने से व्यापारियों को भी लाभ मिलेगा। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के तहत केंद्रीय बीज समिति ने 68वीं बैठक में दोनों प्रजातियों को पूरे देश में बीज व फसल के लिए अनुमति प्रदान कर दी है। प्रजातियां कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देशन में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. महक सिंह ने विकसित की है।

नई प्रजाति

- केंद्रीय बीज समिति ने बीज उत्पादन की अनुमति दी
- अधिक तापमान और अगेती बुआई के लिए उत्तम

सीएसए के अनुवांशिकी व पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. महक सिंह ने बताया कि दस वर्षों के प्रयास के बाद राई (सरसों) की नई प्रजाति आजाद महक (केएमआर ई 15-2) और आजाद चेतना (टीकेएम 14-2) विकसित की है। ये अधिक तापमान व अगेती बुआई के लिए उत्तम हैं। विवि के मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने बताया कि अगले वर्ष से ये बीज उपलब्ध होंगे। कुलपति के मुताबिक ये प्रजातियां पीली क्रांति में योगदान देंगी।

ये दोनों प्रजातियां

आजाद महक : इसका उत्पादन 24 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह बुआई के 120 से 125 दिन बाद तैयार हो जाती है। इसमें तेल का प्रतिशत 41.6 से 42.1 है। अल्टरनरिया झुलसा व सफेद गेरुई रोग नहीं लगता है।

आजाद चेतना : उत्पादन 12 से 14 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह सहफसली 90 से 95 दिन में तैयार होती है। इस प्रजाति में तेल का प्रतिशत 42.2 से 42.4 है। इसमें अल्टरनरिया झुलसा व सफेद गेरुई रोग नहीं लगता है।

कानपुर, 31 मई, 2021 दैनिक जागरण 5

सीएसए की 'आजाद' राई व सरसों जल्द पकेंगी, देंगी अधिक तेल

जासं, कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय 'सीएसए' ने राई व सरसों की ऐसी प्रजातियां विकसित की हैं जो कम समय में पकने के साथ तेल भी अधिक देंगी। विश्वविद्यालय में इजाद की गई 'आजाद महक' अथवा 'केएमआर ' ई 15-2' व सरसों की 'आजाद चेतना' अथवा 'टीकेएम-14-2' प्रजातियां अब किसानों के खेतों तक पहुंचेंगी। यह

प्रो. महक सिंह ● स्वयं

- केंद्रीय बीज श्रृंखला में दोनों प्रजातियों को मिली स्वीकृति

दोनों प्रजातियां केंद्रीय बीज श्रृंखला में आ गई हैं।

सीएसए में विकसित की गई राई की आजाद महक प्रजाति महज 120 से 125 दिन में पककर 24 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर उत्पादन देती है। इसमें 42.2 फीसद तक तेल निकलता है। आजाद चेतना की उपज 12 से 14 कुंतल प्रति हेक्टेयर है, जबकि यह 90 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इसमें भी तेल की मात्रा 42.4 फीसद तक हो सकती है। राई व सरसों की आम प्रजातियों में तेल की मात्रा अधिकतम 39 फीसद तक ही होती है। इन प्रजातियों को बीज एवं फसल उत्पादन की श्रेणी में शामिल किए जाने के बाद अब इन्हें किसानों के खेतों तक भेजे जाने की तैयारी है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय में हुई बैठक में इन प्रजातियों को शामिल कर स्वीकृति दे दी गई। विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. महक सिंह ने बताया कि राई की आजाद महक प्रजाति पर अधिक तापमान का असर नहीं पड़ता है।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress https://worldkhabarexpress.media/

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

अंक : 244 कानपुर नगर

30 मई 2021, रविवार

www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarexpress.com

आप सभी पत्रकार बंधुओ को हार्दिक बधाई

हिंदी पत्रकारिता दिवस

कश्मीर से कन्याकुमारी तक लहलहाएगी सीएसए में विकसित राई- सरसों की प्रजातियां

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय में नवविकसित राई- सरसों की दो उदीयमान प्रजातियां आजाद महक (केएमआरई 15-2) और सरसों (तोरिया) की प्रजाति आजाद चेतना (टीकेएम 14-2) अब कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक लहराएंगी। देश के लगभग सभी राज्यों के लिए केंद्रीय सरकार के बीज अधिनियम 1966 (1966 क 54) की धारा 5 की प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केंद्रीयबीज समिति ने परामर्श के बाद मोटसर में नवविकसित राई-सरसों की प्रजातियों को बीज व फसल उत्पादन की श्रेणी में शामिल किया है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली में 15 मई को हुई 68वीं बैठक में इन प्रजातियों को शामिल कर बीज व फसल उत्पादन को पूरे देश के लिए संस्तुति कर दिया है। विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. महक सिंह ने बताया कि राई की आजाद महक प्रजाति उच्च ताप सहिष्णु और अगेती बुवाई के लिए उत्तम है। उन्होंने बताया कि इसकी उत्पादन क्षमता 24 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है और बुवाई के 120 से 125 दिन बाद पक कर तैयार हो जाती है। साथ ही इस प्रजाति में तेल प्रतिशत 41.6 से 42.1 फीसदी है। डॉ. सिंह ने बताया कि यह प्रजाति, अल्टरनेरिया झुलसा व सफेद रेतुई रोग के प्रति प्रतिरोधी है। यह प्रजाति सहफसली फसलों के लिए उपयुक्त है और यह 90 से 95 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। इसका उत्पादन 12 से 14 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। साथ ही इस प्रजाति में 42.2 से 42.4 फीसदी तेल पाया जाता है। इसके अतिरिक्त यह प्रजाति भी अल्टरनेरिया झुलसा और गेरुई रोग के प्रति प्रतिरोधी है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने बीज समिति की बैठक की कार्यवृत्ति आने पर विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डॉ. महक सिंह व उनकी शोध टीम को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। साथ ही कहा है कि देश में विश्वविद्यालय की नवविकसित राई- सरसों की प्रजातियां पीली क्रांति में अहम योगदान देंगी। कुलपति ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से अपेक्षा की है कि वे शोध कार्यों में गति प्रदान कर फसलों की नई-नई प्रजातियां विकसित करें।

अमर उजाला
सोमवार • 31.05.2021
kanpur.amarujala.com
05

उपलब्धि

सीएसए के प्रो. महक सिंह ने विकसित कीं राई और सरसों की प्रजातियां

हर मिट्टी में उगेगी महक और चेतना

संवाद न्यूज एजेंसी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक साल के शोध के बाद राई और सरसों की दो नई प्रजातियां विकसित की हैं। इन प्रजातियों की खास बात यह है कि देश भर में इनकी बुवाई की जा सकती है। दोनों प्रजातियों में अल्टरनिया झुलसा और गेरुई रोग भी नहीं लगता है।

आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के प्रो. महक सिंह ने राई की आजाद महक (केएमआर (ई 15-2) और सरसों (तोरिया) की आजाद चेतना (टीकेएम 14-2) प्रजाति तैयार की है। केंद्र सरकार ने केंद्रीय बीज समिति से बातचीत के बाद दोनों प्रजातियों को बीज और फसल उत्पादन की श्रेणी में शामिल किया है।

नई दिल्ली में हाल ही में हुई कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की बैठक में देश भर में इन प्रजातियों के प्रयोग की संस्तुति दे दी गई है। कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने कहा कि सीएसए में नवविकसित प्रजातियां पीली क्रांति में अहम योगदान देंगी।

ये हैं विशेषताएं

- प्रो. महक ने बताया कि आजाद महक प्रजाति उच्च तापमान वाले क्षेत्रों में भी बोई जा सकती है और अगेती बुवाई के लिए उत्तम है। उत्पादन क्षमता 24 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह बुआई के 120 से 125 दिन बाद पक कर तैयार हो जाती है। इस प्रजाति में तेल प्रतिशत 41.6 से 42.1% है। आजाद चेतना प्रजाति सहफसली फसलों के लिए उपयुक्त है। यह 90 से 95 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। उत्पादन 12 से 14 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें 42.2 से 42.4% तेल पाया जाता है।

लखनऊ, सोमवार, 31 मई, 2021, वर्ष : 12, अंक : 226, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

www.janexpresslive.co

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस

जन एक्सप्रेस

राई की आजाद महक प्रजाति उच्च ताप सहिष्णु एवं अगेती बुवाई के लिए है उत्तम

कानपुर नगर, (जन एक्सप्रेस संवाददाता)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा नव विकसित राई की आजाद महक और सरसों की आजाद चेतना प्रजाति को बीज एवं फसल उत्पादन की श्रेणी में शामिल किया गया है। इन प्रजातियों को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय नई दिल्ली मे 15 मई को हुई 68 वीं बैठक में पूरे देश में बीज एवं फसलों के उत्पादन के लिए संस्तुति दी गई है।विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ महक सिंह ने बताया कि राई की आजाद महक प्रजाति उच्च ताप सहिष्णु एवं अगेती बुवाई के लिए उत्तम है

इसकी उत्पादन क्षमता 24 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा यह बुवाई के 120 से 125 दिन बाद पक कर तैयार हो जाती है और इस प्रजाति में तेल 41.6 से 42.1 प्रतिशत है। डॉ.सिंह ने सरसों की आजाद चेतना प्रजाति की विशेषताओं के बारे में बताते हुए कहा कि यह प्रजाति सहफसली फसलों के लिए उपयुक्त है तथा यह 90 से 95 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है इसका उत्पादन 12 से 14 कुंतल प्रति हेक्टेयर है और इस प्रजाति में 42.2 से 42.4 प्रतिशत तेल पाया जाता है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.डी.आर.सिंह ने विभागाध्यक्ष डॉ.महक सिंह एवं उनकी शोध टीम को शुभकामनाएं देते हुए कहा है कि देश में विश्वविद्यालय की नवविकसित राई-सरसों की प्रजातियां पीली क्रांति में अहम योगदान देंगी।

हिन्दुस्थान समाचार
587k फॉलोवर्स
फॉलो

कश्मीर से कन्याकुमारी तक लहलहाएगी सीएसए की राई 'महक' व सरसों 'चेतना'

30 May 21 , 6:00 PM

- केन्द्रीय बीज समिति ने बीज एवं फसल उत्पादन की श्रेणी में किया शामिल

कानपुर, 30 मई (हि.स.)। किसानों की आय में वृद्धि के लिए सीएसए के वैज्ञानिक बराबर फसलों की नई प्रजातियों को विकसित कर रहे हैं। इसी क्रम में चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय ने शोध कर राई-सरसों की दो उदयीमान प्रजातियां को विकसित किया है। यह राई और सरसों की क्रमश: आजाद 'महक' और आजाद 'चेतना' नाम की दो प्रजातियों की फसल कम समय में पक कर तैयार हो जाती है और उत्पादन क्षमता अधिक है। साथ ही इससे 40 फीसदी से अधिक तेल पाया जाता है। केन्द्र सरकार ने इन दोनों ही प्रजातियों को बीज एवं फसल उत्पादन की श्रेणी में शामिल कर पूरे देश में बिक्री के लिए संस्तुति दी है।

इस सम्बंध में विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ महक सिंह ने रविवार को बताया कि यह प्रजाति राई आजाद महक (केएमआर(ई)15-2) एवं सरसों (तोरिया) की प्रजाति आजाद चेतना (टीकेएम 14-2) हैं। बताया कि राई की आजाद 'महक' प्रजाति उच्च ताप सहिष्णु एवं अगेती बुवाई के लिए उत्तम है। उन्होंने बताया कि इसकी उत्पादन क्षमता 24 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा बुवाई के 120 से 125 दिन बाद पक कर तैयार हो जाती है। साथ ही इस प्रजाति में तेल प्रतिशत 41.6 से 42.1 प्रतिशत है। डॉ सिंह ने बताया कि यह प्रजाति अल्टरनरिया झुलसा एवं सफेद गेरुई रोग के प्रति प्रतिरोधी है।

डॉ महक सिंह ने सरसों (तोरिया) की आजाद 'चेतना' प्रजाति की विशेषताओं के बारे में बताया कि यह प्रजाति सहफसली फसलों के लिए उपयुक्त है। साथ ही यह 90 से 95 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है और इसका उत्पादन 12 से 14 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। इस प्रजाति में 42.2 से 42.4 प्रतिशत तेल पाया जाता है। इसके अतिरिक्त यह प्रजाति भी अल्टरनरिया झुलसा और गेरुई रोग के प्रति प्रतिरोधी है।

राई-सरसों की प्रजातियां पीली क्रांति में अहम योगदान - कुलपति

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह ने बीज समिति की बैठक की। कार्यवृत्ति आने पर विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डॉ महक सिंह एवं उनकी शोध टीम को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। साथ ही कहा है कि देश में विश्वविद्यालय की नवविकसित राई-सरसों की प्रजातियां पीली क्रांति में अहम योगदान देंगी। कुलपति डॉ सिंह ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से अपेक्षा की है कि वे शोध कार्यों में गति प्रदान कर फसलों की नई-नई प्रजातियां विकसित करें।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने बीज एवं फसल उत्पादन में किया शामिल

सीएसए के कुलपति डॉ सिंह ने बताया कि, केंद्रीय सरकार ने बीज अधिनियम 1966 (1966 क 54) की धारा 5 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केंद्रीय बीज समिति ने परामर्श के बाद सीएसए द्वारा नव विकसित राई-सरसों की प्रजातियों को बीज एवं फसल उत्पादन की श्रेणी में शामिल किया है। इस निर्णय से अब इन प्रजातियों के बीज कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश के लगभग सभी राज्यों में उत्पादन के लिए प्रयोग में लाए जाएंगे। इसका निर्णय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली में 15 मई 2021 को 68वीं बैठक में इन प्रजातियों को शामिल कर बीज एवं फसल उत्पादन के लिए पूरे देश के लिए संस्तुति कर दी है।

हिन्दुस्थान समाचार/अजय/मोहित

खरीफ में प्याज उगाकर किसान भाई लें अधिक मुनाफा- डॉ वी. के.कनौजिया

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित अनौगी स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ वी.के. कनौजिया का कहना है कि खरीफ में प्याज उगाकर रबी प्याज की तुलना कम से कम दुगना मुनाफा कमाया जा सकता है। खरीफ प्याज के लिए 15 जून तक बीज की बुवाई पौधशाला (नर्सरी) में कर देनी चाहिए। एक हेक्टेयर में प्याज के रोपण हेतु 500 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में पौध उगाने की आवश्यकता होती है। खरीफ प्याज की प्रचलित प्रजातियां एन–53, एग्रीफाउंड डार्क रेड आदि के 8 से 10 किग्राहै. बीज की आवश्यकता होती है। पौधशाला का स्थान ऊंचाई पर होना चाहिए। जिससे जल निकास आसानी से हो सके। भूमि को 4 से 5 बार अच्छी जुताई करके भुरभुरा कर आवश्यक मात्रा में सड़ी हुई गोबर की खाद को मिलाने के ऊपर उपरांत 1 मीटर चौड़ी तथा 10 से 15 सेंमी उठी हुई क्यारियां बना लेनी चाहिए। प्रत्येक दो क्यारियों के बीच 30 से 40 सेंटीमीटर का स्थान नाली के रूप में तथा आवागमन हेतु छोड़ देना चाहिए। बुवाई करने के पूर्व बीज को 2 ग्राम थीराम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित कर लेना चाहिए। क्यारियों के ऊपर 5 से 7 सेंमी की दूरी पर 1.5 से 2.0 सेंमी गहरी पतली नाली में बीज की बुवाई करने के उपरांत बीज को हल्की भुरभुरी मिट्टी अथवा साड़ी गोबर की खाद से ढक दिया जाना चाहिए तथा ऊपर से धान के पुआल अथवा फसल अवशेषों की बिछावन डालने के बाद हजारे की सहायता से पानी दिया जाना चाहिए। प्रत्येक दिन सुबह अथवा सायं कालीन हजारे से हल्की सिंचाई करते रहना चाहिए। जैसे ही जमाव पूर्ण हो जाए तो बिछावन को हटा देना चाहिए। जब पौध मजबूत हो जाए उसके बाद नालियों के द्वारा हल्की सिंचाई करनी चाहिए। आवश्यकतानुसार खरपतवारों को पतली खुरपी की सहायता से निकालते रहें। इस प्रकार खरीफ में बुवाई के 40 से 45 दिन बाद पौध रोपण हेतु तैयार हो जाती है जिसका रोपण 15 अगस्त के उपरांत जब बारिश हल्की हो जाए तो मुख्य खेत में किया जाना चाहिए। डॉ अमर सिंह, वैज्ञानिक, उद्यान ने बताया कि खरीफ प्याज का रोपण छोटी–छोटी गांठों के द्वारा भी किया जाता है। पौध हेतु बीज की बुवाई मध्य मार्च से मध्य अप्रैल के बीच की जाती है। जिससे मध्य जून तक 55 से 60 दिनों में प्याज की छोटी छोटी गांठें बन जाती हैं जिनका आकार 1.5 से 2.0 सेमी होता है। इन्हें उखाड़ने के बाद हवा तथा छायादार स्थान पर रखा जाता है। रोपण के पूर्व गांठों को सूखे पौधों से अलग कर शोधित करने के बाद प्याज की छोटी–छोटी गांठों की रोपाई मुख्य खेत में 20 से 25 सेमी पंक्ति से पंक्ति तथा 10 से 12 सेमी पौधे से पौधे की दूरी पर की जानी चाहिए। डॉ खलील खान, वैज्ञानिक, मृदा विज्ञान ने बताया कि रोपण के 15 दिन पूर्व खेत में 20 टनहै. साड़ी गोबर की खाद मिला देना चाहिए। आवशयकतानुसार एक गहरी जुताई तथा 3 से 4 जुताई कल्टीवेटर से करके भूमि को भुरभुरा बना लेना चाहिए। अच्छे उत्पादन हेतु 120 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस, 60 किग्रा पोटाश तथा 25 किग्रा गंधक की आवश्यकता होती है। बुवाई के ठीक पहले आधी मात्रा नाइट्रोजन तथा पूरी मात्रा में अन्य पोषक तत्वों को भूमि में मिला देना चाहिए। शेष नाइट्रोजन को दो बराबर हिस्सों में खड़ी फसल में 30 तथा 45 दिन बाद देना चाहिए।

नर सेवा ही है नारायण सेवा- सुरेंद्र मैथानी, विधायक

भाजपा मण्डल अध्यक्ष चंद्रमणि के नेतृत्व में खाद्य सामग्री, मास्क व सेनेटाइजर का किया गया वितरण

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

पनकी कानपुर। केंद्र सरकार के 7 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर गोविंद नगर विधायक सुरेंद्र मैथानी ने विधानसभा के अंतर्गत पनकी मंडल अध्यक्ष के साथ वार्ड दो, दादा नगर सेवा बस्ती में मास्क और सैनिटाइजर वितरित किया। इसी प्रकार वार्ड 9, आलोक तिवारी रश्मि सिंह, राजेश चौहान, कृष्ण कुमार तिवारी, उदय वर्मा, आशा देवी, आदित्य शुक्ला, अनिल गुप्ता, राहुल उपाध्याय, अमर बाल्मीकि, अनिल निषाद, संदीप श्रीवास्तव ,मकसूदन सिंह, आनंद पांडे, शकुंतला कार्यकर्ताओं ने विभिन्न वार्डों में मास्क, सैनिटाइजर, खाद्य सामग्री बिस्कुट इत्यादि वितरित कर कार्यकर्ताओं के

31 may iko 2021.pdf - Read-only

लखनऊ संस्करण
वर्ष-05, अंक -215
सोमवार, 31 मई, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु*
लखनऊ, नोएडा, झांसी और देहरादून से प्रकाशित

दैनिक भास्कर

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

For epaper → www.updainikbhaskar.com

06 भारत में विदेशी निवेशकों के झुकाव का एक अवसर, अंत

यह प्रजाति अल्टरनरिया झुलसा एवं सफेद गेरुई रोग के प्रति प्रतिरोधी : डॉ. महक

लहलहाएंगी सीएसए द्वारा नवविकसित राई-सरसों की प्रजातियां

भास्कर न्यूज

कानपुर। सीएसए द्वारा नवविकसित राई- सरसों की दो उदयीमान प्रजातियां आजाद महक (के एन आर (ई)15-2) एवं सरसों (तोरिया) की प्रजाति आजाद चेतना (टीकेएम 14-2) अब कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश के लगभग सभी राज्यों के लिए केंद्रीय सरकार द्वारा बीज अधिनियम 1966 (1966 क 54) की धारा 5 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केंद्रीय बीज समिति ने परामर्श के उपरांत सीएसए द्वारा नव विकसित राई-सरसों की प्रजातियों को बीज एवं फसल उत्पादन की श्रेणी में शामिल किया है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली में 15 मई को आहूत हुई 68 वी बैठक में इन प्रजातियों को शामिल कर बीज एवं फसल उत्पादन हेतु पूरे देश के लिए संस्तुति कर दिया है। विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ महक सिंह ने बताया कि राई की आजाद महक प्रजाति उच्च ताप सहिष्णु एवं अगेती बुवाई हेतु उत्तम है। उन्होंने बताया कि इसकी उत्पादन क्षमता 24 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा बुवाई के 120 से 125 दिन बाद पक कर तैयार हो जाती है। साथ ही इस प्रजाति में तेल प्रतिशत 41.6 से 42.1% है डॉ सिंह ने बताया कि यह प्रजाति अल्टरनरिया झुलसा एवं सफेद गेरुई रोग के प्रति प्रतिरोधी है। डॉ महक सिंह ने सरसों (तोरिया) की आजाद चेतना प्रजाति की विशेषताओं के बारे में बताया कि यह प्रजाति सहफसली फसलों के लिए उपयुक्त है।तथा यह 90 से 95 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है।और इसका उत्पादन 12 से 14 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। साथ ही इस प्रजाति में 42.2 से 42.4% तेल पाया जाता है। इसके अतिरिक्त यह प्रजाति भी अल्टरनरिया झुलसा और गेरुई रोग के प्रति प्रतिरोधी है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी.आर.सिंह ने बीज समिति की बैठक की कार्यवृत्ति आने पर विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डॉ महक सिंह एवं उनकी शोध टीम को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।साथ ही कहा है कि देश में विश्व विद्यालय की नवविकसित राई- सरसों की प्रजातियां पीली क्रांति में अहम योगदान देंगी। कुलपति डॉ सिंह ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से अपेक्षा की है कि वे शोध कार्यों में गति प्रदान कर फसलों की नई नई प्रजातियां विकसित करें ।